वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६४ अंक ०१ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, अगस्त, २०१४

सम्पा० **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व० **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

जन्मपत्री तथा भविष्वाणियाँ

लेखक—***पं० मनसाराम वैदिक तोप***

कहते हैं कि पंजाब में एक झल्लन नाम का जाट था। उसका पुत्र रोग्रस्त हो गया। उसके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि अब डॉक्टरों को कौन बुलाता फिरेगा! डॉक्टरों की फीस तथा ओषधियों का मूल्य मैं सहन नहीं कर सकूँगा। ये जो गंडे-तावीज़ करने वाले स्याने होते हैं, उनके पास चलो, उनसे कोई गंडा-तावीज़ ले आवेंगे और लड़के को आराम हो जायेगा। यह सोचकर झल्लन स्याने के मुहल्ले में गया तो क्या देखता है कि उस तावीज़ देने वाले के अपने ही घर में रोना-पीटना पड़ रहा है। झल्लन ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने बताया कि स्याने का 25 वर्षीय युवक पुत्र कल ही चल बसा। यह सुनते ही झल्लन कुछ पूंछे बिना ही वहाँ से अपने घर को लौट आया।

ज्योतिषी के घर में शोक—चार-छह मास के पश्चात् झल्लन की पुत्री का शुभ विवाह होने वाला था। झल्लन ने सोचा—चलो पांधाजी से विवाह का मुहूर्त्त पूछ आवें। यह सोचकर झल्लन पांधाजी के घर पहुँच गया। संयोग ऐसा हुआ कि पांधाजी के घर में भी रोना-धोना मचा हुआ था। झल्लन ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने बताया कि पांधाजी की एक सोलह-वर्षीय पुत्री विधवा हो गई है। उसके विवाह को अभी केवल छः मास ही हुए थे। यह सुनकर झल्लन वहाँ से भी वापस आ गया। उसने पंजाबी में एक दोहा बोला—

वैद्या दे घर पिट्टनाँ, पांध्याँ दे घर रण्ड।
चल झल्लन घर अपने, साहा धरो निःसंग।।

अर्थात् स्यानों के घर में भी शोकाकुल लोग रो-धो रहे हैं और मुहूर्त्त निकालने वालों के अपने घर में पुत्री रांड (विधवा) हो बैठी है। चल रे झल्लन, अपने घर चल और निःशङ्क होकर 'साहा' (विवाह की तिथि) निश्चित कर दे।

उसने सोचा—जब पांधा को अपनी पुत्री के ही विधवा होने का पता नहीं लगा तो मेरे सम्बन्ध में वह क्या बता सकेगा? यह बात ठीक है भाई, इन बातों का किसी को भी

पता नहीं लगता। 'भोज प्रबंध' में लिखा भी है कि, "घोड़े का कूदना, मेघों की गर्जन, स्त्रियों के मन की बात, मनुष्य का भाग्य, वर्षा का न होना अथवा अतिवृष्टि, इन सब बातों को देवजन भी नहीं जान सकते, मनुष्य का तो सामर्थ्य ही क्या है।[१]

सबसे बड़े ज्योतिषी का भ्रम टूटा–काशी–निवासी पं० सुधाकर द्विवेदी काशी के सबसे बड़े ज्योतिषी माने जाते थे। उन्होंने संस्कृत व ज्योतिष के सैकड़ों ग्रन्थों की टीकाएँ लिखी हैं। वह बनारस के राजकीय संस्कृत कॉलेज में ज्योतिष–विभाग के अध्यक्ष थे। उनके घर एक पुत्री ने जन्म लिया। उन्होंने उसकी जन्मकुण्डली बनावाई और उसके जन्म का ठीक–ठीक समय जानकर अपने मित्रों व शिष्यों को भेज दिया। सबने उस कन्या की जन्मकुण्डली बनाकर भेजी और लिखा कि कन्या का सौभाग्य अटल होगा। पण्डित सुधाकर जी को स्वयं भी गणित से ऐसा ही ज्ञात हुआ। परन्तु वह कन्या विवाह के छह मास के पश्चात् ही विधवा हो गई। इस पर पण्डितजी का फलित ज्योतिष पर विश्वास सदा–सदा के लिए डोल गया और उन्होंने काशी के टाउन हॉल में फलित ज्योतिष के खण्डन में व्याख्यान दिया तथा सब ज्योतिषियों को चुनौती दी कि आओ, फलित ज्योतिष पर शास्त्रार्थ करो! परन्तु कोई भी ज्योतिषी उनके सामने न आया। उन्होंने श्री जनार्दन जोशी डिप्टी कलैक्टर को एक पत्र में लिखा है–"मेरा फलित ज्योतिष में विश्वास नहीं है। मैं इसको एक प्रकार का खेल समझता हूँ। ये ज्योतिषी लोग अपने झूठे बकवास से लोगों का धन व्यर्थ में ही लूटते हैं।"

ऋषि दयानन्द के बारे में कहा था–"श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में ज्योतिषी ने उनके पिताजी को बतलाया कि इस बालक के दो विवाह होंगे, परन्तु स्वामी जी तो संन्यासी बन गए और बाल ब्रह्मचारी रहे। स्वामी वेदानन्द जी ने बतलाया कि हम दो व्यक्तियों को जानते हैं जिनका जन्म एक ही ग्राम में, एक ही मुहल्ला व एक ही समय में हुआ। उनका नाम भी एक ही रखा गया, परन्तु एक रलाराम तो पाँच सहस्र रूपय मासिक पाते रहे, मन्त्री भी बने; और दूसरा रलाराम आजीवन साठ रुपये मासिक से अधिक न पा सका। अत: किसी की उन्नति व पतन का आधार जन्म का समय नहीं, प्रत्युत पूर्व–जन्म के कर्म एवं पुरुषार्थ ही हैं।

ज्योतिषी की पुत्री का अपहरण हो गया–गत दिनों समाचारपत्रों में एक घटना प्रकाशित हुई कि एक बहुत बड़े ज्योतिषी की पुत्री का एक स्कूल मास्टर ने अपहरण कर लिया है। चौदह दिन तक उस ज्योतिषी ने किसी को पता तक नहीं दिया। चौदह दिनों तक वह लोगों को यह बतलाता रहा कि लड़की मामा के घर मिलने के लिए गई है।

1. द्रष्टव्य बलाल पण्डित रचित 'भोज प्रबंध', श्लोक–संख्या 142

चौदह दिन के पश्चात् आर्यसमाज के प्रधान को पता चला तो वह दो–चार सज्जनों के साथ लेकर ज्योतिषी के घर पर गए और वास्तविक स्थिति को जानकर कहा, "चलो थानामें चलकर रिपोर्ट तो लिखवाएँ।"

ज्योतिषी जी ने कहा, *अब लड़की तो मेरे काम की रही नहीं, मैं उसको घर पर तो रख नहीं सकता।"

इस पर प्रधान आर्यसमाज ने कहा, "वह आपकी ही पुत्री नहीं, प्रत्युत हमारी भी है। हम उसको अपने पास रखेंगे।"

अन्ततः थाना में रिपोर्ट लिखवाई गई। थाना से पुलिस को साथ लेकर मन्त्री आर्यसमाज कोयटा गया और वहाँ से बहावलपुर राज्य में जाकर लड़की को खोज निकाला। चार–पाँच सहस्र रुपये लगाकर और पाँच मास तक घोर परिश्रम करके उस लड़की का विवाह किया गया। ज्योतिषी जी को जन्मपत्री से इन सब बातों का ज्ञान न हो सका कि लड़की का अपहरण होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि ज्योतिषियों को स्वयं अपने बारे में ही विपत्तियों का पता नहीं लग सकता, दूसरों को तो वे क्या बतलावेंगे। इस सम्बन्ध में एक और उदाहरण है–

जाट के घर पर ज्योतिषी–कहते हैं कि एक जाट खेत में गया हुआ था। उसकी धर्मपत्नी घर पर ही थी। ज्योतिषी जी घर पर उसकी स्त्री के पास आया और उसका हाथ देखकर बतलाया कि तुम्हारे ऊपर तो ढाई वर्ष के लिए कठिन समय है। यह सुनकर उस जाटनी के तो होश ही उड़ गए। इतने में ही जाट भी अपने खेत का कार्य निपटाकर घर पर आ गया। जाटनी ने जाट को देखकर कहा कि "देखो, हमारे ऊपर तो ढाई वर्ष के लिए बहुत विपत्ति है। यह पण्डित जी ने बतलाया है।"

जाट ने पण्डित जी से पूछा, "यह विपत्ति किसी प्रकार से टल भी सकती है क्या?"

ज्योतिषी जी ने कहा, "हाँ, गेहूँ वा घृत आदि के दान से विपदा दूर की जा सकती है।"

यह सुनकर जाट ने जाटनी से कहा, "भीतर से एक मन गेहूँ पण्डित जी को लाकर दान कर दो। यह बला तो दूर करनी ही पड़ेगी।"

यह सुनकर जाटनी तो गेहूँ लेने भीतर चली गई। जाट ने भी अन्दर से घर का कुण्डा लगा दिया और एक छोटा–सा दण्डा लेकर ज्योतिषी जी की पिटाई आरम्भ कर दी और सिर से लेकर पाँव तक उसकी खूब पिटाई–कुटाई कर दी। तब ज्योतिषी जी ने करबद्ध विनती करके चौधरी से कहा, "अब की बार मेरी जान छोड़ दो। मैं भविष्य में कभी ऐसा काम नहीं करूँगा।"

इस पर जाट ने कहा कि "पण्डित जी, मैं आपको छोड़ तो दूँगा, परन्तु एक बात

बतलाएँ कि आपको हमारी तो ढाई वर्ष की विपत्ति का पूर्व से ही ज्ञान हो गया, परन्तु आपको अपनी विपदा का ढाई मिनट पहले भी पता नहीं लगा कि अभी कुण्डी बन्द करके आपकी पिटाई होगी!"

जब बिहार में भूकम्प आया—जब बिहार में भूकम्प आया तो सैकड़ों जानें गईं और लाखों रुपये की सम्पदा नष्ट हो गई। कोई भी ज्योतिषी एक मिनट पहले तक नहीं बतला सका कि भूकम्प आएगा। परन्तु जब भूकम्प आ चुका तो एक ज्योतिषी ने समाचारपत्रों में भविष्यवाणी प्रकाशित करवा दी कि 28 फरवरी की रात्रि पुनः वैसा ही भूकम्प आएगा। शरद् ऋतु थी, कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, लोग अपने-अपने बिस्तर उठाए हुए भागे-भागे फिरे। न कुछ आया, न गया।

कोयटा में भगदड़ कैसे—अब देख लो, यह कोयटा का भूकम्प जिसमें पचास सहस्र जन समाप्त हो गए और करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हो गई, परन्तु कोई ज्योतिषी एक मिनट पूर्व तक नहीं बतला सका कि भूकम्प आने वाला है। परन्तु जब आ चुका तो अमृतसर में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी कि आज रात को तीन बजे वैसा ही भूकम्प आएगा। गर्मियों के दिन थे। लोग मकानों की छतों पर सोए हुए थे। एक गृहस्थी के घर में चूहों ने रसोई के पात्रों में खटखट कर दी। उसको तो पूर्व से भूकम्प का संस्कार था। 'भूकम्प-भूकम्प' कहकर शोर मचा दिया। सारे मुहल्ले में भगदड़ मच गई और देखते-ही-देखते नगर भर में भागा-दौड़ी पड़ गई। न कुछ आया, न गया।

टर्की के भूकम्प के समय—अभी थोड़े दिन हुए टर्की में भूकम्प आया जिसमें तीस सहस्र व्यक्ति मारे गए और करोड़ों की सम्पदा का विनाश हो गया। परन्तु यूरोप का एक भी ज्योतिषी एक मिनट पहले तक नहीं बतला सकता कि भूकम्प आवेगा। परन्तु लाहौर के ज्योतिषियों ने समाचारपत्रों में प्रकाशित करवा दिया कि कश्मीर में भूकम्प आएगा। श्रीनगर के लोग रात को शीत में मैदानों में पड़े रहे। न कुछ आया न गया।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय—आज से पचीस वर्ष पूर्व जब कि अंग्रेज़ों का जर्मनी से युद्ध छिड़ा हुआ था, उस समय टर्की जर्मनी के साथ था। मैंने स्वयं उस समय मुसलमानों को यह कहते हुए अपने कानों से सुना था कि हमारी हदीसों में लिखा है कि अमुक तिथि को टर्की का शासक जामा मस्जिद में आकर नमाज पढ़ेगा। और यह हमारेवाले भी भागवत का पोथा बगल में लिये फिरते थे कि बस इतना ही टोपी-राज रहना था. अब इनकी टोपी समाप्त होने वाली है। यदि शासन इन बातों को सुनकर हाथ-पाँव ढीले कर देता तो टर्की का शासक भी जामा मस्जिद में आकर नमाज पढ़ लेता और उनकी टोपी भी समाप्त हो जाती। परन्तु शासक तो जानता था कि ये सब अंधविश्वास की बातें हैं। ये बातें कभी व्यवहार में आने वाली नहीं हैं। सरकार पूर्ववत् अपने पुरुषार्थ में लगी

रही। परिणाम यह निकला कि उनकी हदीसें धरी–धराई रह गईं और इनका भागवत का पोथा धरा–धराया रह गया। अंग्रेज़ी राज्य पूर्ववत् भारत में दनदनाता रहा।

सेठों को दीवालिया कर दिया–इन ज्योतिषियों ने सैकड़ों सेठों का तो दीवाला ही निकलवा दिया। जब ये ज्योतिषी लोग बाज़ार में जाते तो दुकानदार लोग इनके पीछे, लग जाते–'महाराज! गेहूँ का भाव घटेगा या चढ़ेगा? सोना मन्दा होगा अथवा तेज़?' दस को मन्दा बता देंगे और दस को कहेंगे–भाव चढ़ेंगे। कोई मरे कोई जिये, सुथरा घोल बताशे पिये।' यदि भाव चढ़े तो दस मँहगे वालों को लूट लिया, यदि सस्ता हो गया तो दस मन्देवालों को लूट लिया। इस ठग्गी का संसार में कहीं भी अन्त नहीं है।

कोई कुशल व्यापारी कहे तो–यदि कोई व्यापार में सुदक्ष व्यक्ति किसी वस्तु की उपज व खपत का अनुमान लगाकर कोई बात बतलावे, तो सम्भव है कि उसका कथन कुछ सीमा तक सत्य सिद्ध हो, परन्तु जिन लोगों का व्यापार से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, उन लोगों से व्यापार के सम्बन्ध में परामर्श लेना स्वयं को डुबोने वाली बात नहीं तो क्या है? यदि इन लोगों को मन्दे व तेजी का पता लग जाता तो ये लोग स्वयं ही सौदे करके करोड़पति क्यों न बन जाते? परन्तु ये तो दूसरों को ही करोड़पति बनाते फिरते हैं। स्वयं तो दो–दो पैसे के लिए लोगों की दुकानों के चक्कर काटते हुए जूते घिसते रहते हैं।

लायलपुर में बाबू बर्बाद हो गए–महाशय केसरचन्द जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बताया कि लायलपुर में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि यह तोरिया जिसका तेल निकलता है, यह नौ रुपये मन हो जावेगा। उस समय तोरिया का भाव साढ़े चार रुपये मन था। बाबू लोगों ने जो सर्विस में थे, बैंकों व डाकघरों से अपनी–अपनी पूँजी निकलवाकर यथाशक्ति सहस्रों रुपये का तोरिया खरीद लिया। परन्तु तोरिया का भाव गिरकर ढाई रुपये मन हो गया। सर्विस करनेवाले अनेक बाबू इस धंधे में बर्बाद हो गए। इनमें से कुछ एक मिलकर ज्योतिषी जी के पास गए और पूछा कि आपके ज्योतिष को क्या हुआ? वह बड़ी सरलता से बोले, "मेरी गणना में एक बिन्दु का अंतर रह गया जो मुझे दिखाई न दिया।" अब ज्योतिषी को तो केवल एक बिन्दु का पता न चला, परन्तु उसकी भूल से लोगों के सहस्रों डूब गए।

ज्योतिषी कैसे ठगते हैं–एक ज्योतिषी गलियों में जाता है तो ये हमारी माताएँ झट उसके आगे हाथ कर देती हैं कि देखना बाबा, मेरे क्या होगा? अब यदि बाब कहे कि तुम्हारे कुछ नहीं होगा तो बाबे को क्या मिले? बाबा कहता है कि "माई जी, लड़का होगा लड़का!" माई बहुत प्रसन्न होती है और कुछ–न–कुछ राशि नौ मास पूर्व ही अग्रिम दे देती है। फिर वह पड़ोसन के पास जाकर कहता है कि "होगी तो उसके यहाँ कन्या,

परन्तु मैंने उसका मन प्रसन्न करने के लिए पुत्र कह दिया है।" इतना कहकर ज्योतिषी जी तो चलते बने। अब आए एक वर्ष के पश्चात्। आप जानते ही हैं कि कोई ऊँट-घोड़ा तो होने से रहा! या लड़का होगा या लड़की होगी! यदि लड़का हुआ तो उसके पास पहुँचे कि देखा, हमने कहा था कि पुत्र का जन्म होगा! अब लाओ कुछ भेंट-पूजा! यदि कन्या का जन्म हुआ तो उसके पास न जाकर पड़ोसन के पास पहुँचे कि हमने कहा था कि उसके कन्या होगी, हमने उसका मन प्रसन्न करने के लिए लड़का कह दिया था। अब लाओ कुछ भेंट-पूजा! यदि पुत्र हुआ तो उसको लूटा, यदि लड़की हुई तो दूसरे को लूटा।! इस ठग्गी का जगत् में कोई अन्त ही नहीं।

माँ-बेटा दोनों ज्योतिषी—जिन दिनों हम स्कूलों में पढ़ा करते थे, उन दिनों हमने एक चुटकुला पढ़ा था। एक बालक ने कहा कि मैं बड़ा ज्योतिषी हूँ और मेरी माँ मेरे से भी बढ़कर ज्योतिषन है। लोगों ने पूछा कैसे? उसने कहा जब मेघ आते हैं तो मैं कहता हूँ वर्षा होगी, और मेरी माँ कहती है कि नहीं वर्षेंगे। तो या तो वह होता है जो मैं कहता हूँ, या वो होता है जो मेरी माँ कहती है।

इस प्रकार का ज्योतिषी तो प्रत्येक व्यक्ति बन सकता है। ये हाथ में जो रेखाएँ होती हैं, ये तो हाथों में जोड़ों के निशान हैं। जो लोग हाथों से श्रम करते हैं उनके हाथों पर ये रेखाएँ कम होती हैं, और जो लोग हाथों से थोड़ा काम करते हैं उनके हाथों में रेखाएँ अधिक होती हैं। इन हाथों में कहीं पर भी धन, सम्पदा, आयु, सन्तान, विवाह आदि लिखा हुआ नहीं होता।

हाथ में क्या लिखा है?—कहते हैं कि एक आर्योपदेशक एक ग्राम में प्रचार करने के लिए गया। जब वह एक सज्जन के घर भोजन करने गया तो एक माता ने उसके आगे अपना हाथ करते हुए कहा, "देखना पण्डित जी! मेरे हाथ में क्या है?" पण्डित जी ने सहज रीति से कहा, "माताजी! तुम्हारे हाथ में मुझको तो हड्डियाँ, लहू व चर्म दिखाई दे रहा है।" माता ने कहा कि "पण्डित जी! मैं यह बात नहीं पूछा रही। मैं तो यह पूछ रही हूँ कि मेरे इस हाथ में पुत्र कितने लिखे हैं और पुत्रियाँ कितनी लिखी हैं? इनमें से कितनों का जीवन लिखा है और कितनों का मरण लिखा है?— इस पर पण्डित जी ने उत्तर दिया, "माताजी! यह हाथ है, नगरपालिका का कार्यालय नहीं है।"

मौत का समय बताकर—ये ज्योतिषी लोग कितने ही व्यक्तियों की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी करके उनको झंझट में फँसा देते हैं और बहुत-से लोग तो ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करके स्वयं जनता के उपहास का कारण बन जाते हैं। उदाहरण के लिए अभी 'दैनिक प्रताप' लाहौर के 25 अप्रैल सन् 1940 के पृष्ठ 18 पर कालम तीन में एक रोचक समाचार छपा है—

"ज्योतिष में अंधविश्वास की सीमा तक आस्था ने एक व्यक्ति को किस प्रकार समय से पूर्व मृत्यु–शय्या पर लिटा दिया, इस प्रकार की घटना अभी इन दिनों शेखूपुरा में घटी है। लाला दीवानचन्द मल्होत्रा, जो रिटायर्ड सरकारी अधिकारी हैं और रावलपिण्डी के हैल्थ आफीसर डॉ० हरबंसलाल के पिता हैं, ज्योतिष में बहुत विश्वास रखते हैं। उनकी आयु इस समय लगभग साठ वर्ष है। एक ज्योतिषी ने लालाजी को बताया कि वह अमुक दिन अमुक समय स्वर्गवासी हो जाएँगे। इस पर लालाजी ने अपने सब प्रेमियों, मित्रों व सम्बन्धियों को सूचित कर दिया। दान–पुण्य जो करना था, करके, मृत्यु की बाट देखने लगे। चारपाई छोड़कर धरती पर लेट गए। आप एक सप्ताह तक मृत्यु की प्रतीक्षा में रहे। चिन्ता से भार घटकर आधा रह गया। ज्योतिषी द्वारा बताई गई मौत की घड़ी निकल गई। मौत नहीं आई, नहीं आई। लालाजी ने अपने सब मित्रों सगे–सम्बन्धियों को क्षमा–याचना व धन्यवाद के पश्चात् लौट जाने को कहा। यह घटना सारे नगर की रुचि व मनोरंजन का विषय बनी हुई है।"

वह हरिद्वार मरने गया–एक सज्जन की ज्योतिषी ने जन्मपत्री बनाई और उसमें लालाजी की आयु 47 वर्ष की लिखी थी। जब लालाजी की आयु 46 वर्ष बीत गई तो 47वें वर्ष आप अपनी आयु समाप्त करने के लिए हरिद्वार जा रहे थे तो मार्ग में पं० जनार्दन जोशीजी डिप्टी कलैक्टर अल्मोड़ा भी उसी डिब्बे में सवार हुए। लालाजी से वार्तालाप होने पर उनका प्रयोजन सुनकर पण्डित जी बहुत हँसे और उन्हें समझाने लगे कि "परमात्मा के सिवा यह किसी को भी पता नहीं कि किसकी कितनी आयु है। फलित ज्योतिष केवल लोगों को ठगने का बहाना है। मैं भी ज्योतिष जानता हूँ और मुझे इस पर कतई विश्वास नहीं है।" पण्डित जी की बात लाला जी की समझ में आ गई और वह हरिद्वार से स्नान करके गुरदासपुर लौट आए। अब उनकी आयु 63 वर्ष है और स्वस्थ–नीरोग जीते–जागते विच रहे हैं।

और वह न मरे–पं० नन्दलाल जी चौधरी बटाला आर्यसमाज में रहते हैं। उनकी जन्मपत्री ज्योतिषी ने बनाई और आयु 70 वर्ष लिखी है। इस समय पण्डित जी की आयु 80 वर्ष है और वह जीते–जागते स्वस्थ दिन बिता रहे हैं। यह बात उन्होंने स्वयं मुझे बताई।

एक महात्मा मरने बैठे तो–रावलपिण्डी में एक चरायतेवाले सिख महात्मा प्रसिद्ध हैं जो कि सब तीर्थों को चरायते का जल पिलाते हैं। गत दिनों तक ज्योतिषी ने उन्हें बतलाया कि आपका निधन आज से साठ दिन के पश्चात् हो जाएगा। महात्मा जी इस बात को सुनकर गुरुद्वारे में बैठ गए और अपनी मृत्यु का विज्ञापन देकर घोषणा कर दी। स्त्रियाँ, पुरुष व बालक सब दर्शनार्थ आने लगे। पर्याप्त भेंट–पुजापा चढ़ने लगा। सहस्रों रुपये चढ़ावा पाकर बाबाजी ने एक सौ रुपये बाजेवालों को, पचास रुपए मोटरवालों को

और पचास रुपये फूलोंवालों को दिए और कहा कि मृत्यु के पश्चात् मेरी शव-यात्रा निकालकर पंजा साहेब होते हुए मुझे अटक नदी में प्रवाहित कर देना। जब पंद्रह दिन शेष रह गए तो पुलिस को भी पता लगा और उसने महात्मा जी पर पहरा लगा दिया और एक डॉक्टर भी विधिवत् आकर बैठ गया। जब नियत समय समाप्त होने में दो घण्टे शेष रह गए तो एक मोटर को फूलों से सजाकर उसमें महात्मा जी को बिठाया गया और बाजा बजने लगा। निश्चित समय पर महात्मा जी ने मरने वालों के समान धुड़धुाड़ियाँ भी लीं। परन्तु जब नियत समय पर वह न मरे, तो लोगों ने महात्मा जी पर ईट-पत्थर की वर्षा आरम्भ कर दी और उच्च स्वरों में कहा, "अब आप मरते क्यों नहीं? लोगों का इतना रुपया ठग लिया।" पुलिस ने बहुत कठिनाई से लोगों से महात्मा जी की जान बचाई। मोटर को दौड़ाकर थाना में ले गए। जब पुलिस ने वास्तविकता की जाँच-पड़ताल की तो महात्मा जी ने बलाया कि मुझे तो यह बात ज्योतिषी ने बतलाई थी। इस घटना ने एक मास तक लोगों को आश्चर्य में डाले रखा।

लतालेवाले महात्मा बिशनदास—श्री पं० बिशनदास जी लतालेवालों को ज्योतिषयों ने बतलाया था कि आपकी आयु 69 वर्ष है, परन्तु आप 47 वर्ष की आयु में परलोक सिधारे।

लाला सालिगराम जी जाखल मण्डी हरियाणा को पं० नन्दकिशोर मेरठ के भृगुसंहितावाले ज्योतिषी जी ने यह बतलाया था कि तुम विक्रम सम्वत् 1982 में स्वर्गवासी हो जाओगे। परन्तु वह आज-पर्यन्त (सम्वत् 1997 में भी) ठीक-ठाक जीवित हैं।

भृगुसंहितावालों की गप्प—महाशय हंसराज जी आर्य, मन्त्री आर्यसमाज जाखल को इन्हीं पं० नन्दकिशोर जी भृगुसंहितावालों के सुपुत्र ने सुनाम के निकट गुजराँ ग्राम में बतलाया था कि तुम्हारे तीन पुत्र होंगे और तीनों जीवित रहेंगे। परन्तु अब तक दो पुत्रों का जन्म हुआ है और दोनों ही मर गए हैं, वे भी ज्योतिषी जी के बतलाने से पहले ही। यह बात ग्यारह वर्ष पूर्व गुजराँ में ज्योतिषी जी ने महाशय जी को भी बताई थी।

ज्योतिषी का पुत्र गुरु—पिण्ड दादन खाँ के ज्योतिषी पं० अमरचन्द का पुत्र पाँच वर्ष से गुम है, परन्तु वह अब तक अपने पुत्र का पता नहीं लगा सके।

जन्म का समय व भोग—ये ज्योतिषी लोग जो जन्मपत्री बनाते हैं, यह उस समय को ध्यान में रखकर बनाई जाती है कि जिस समय में किसी मनुष्य का जन्म होता है, और लोगों को आगे चलकर जो दु:ख व सुख प्राप्त होने हैं, वे बतलाते हैं। वे प्रत्येक व्यक्ति के नाम के प्रथम अक्षर के अनुसार उसके वर्ग व राशि को निकालकर उस राशि का सुख व दु:ख बतलाते हैं।

एक क्षण में अनेक का जन्म—अब यह बात विचारणीय है कि संसार में जिस

क्षण एक राजा के घर पुत्र का जन्म होता है, उसी क्षण एक रंक के घर भी एक बालक का जन्म होता है। भाव यह है कि उसी एक क्षण में इस सृष्टि में अनेक जीवन विभिन्न योनियों में जन्म लेते हैं। यदि जन्म का समय ही किसी जीव के सुखी–दुःखी होने का कारण है तो ऐसे सब बच्चों का भाग्य एक समान होना चाहिए, परन्तु संसार में हमें ऐसा दिखाई नहीं देता।

राशि से भोग का शुद्ध भ्रम–यदि संसार में किसी के नांम के प्रथम अक्षर से ही उसके भविष्य के सुख–दुःख का पता चल सकता है तो क्या जिन मनुष्यों के नाम के प्रथम अक्षर एक–से हैं, उनके सुख–दुःख आदि भोग क्या एक समान होते हैं? कदापि नहीं, कदापि नहीं।